>

Title: Need to take steps to bring back the sacred alms bowl used by Lord Budha from Kabul Museum in Afghanistan.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदया, भगवान बुद्ध का मशहूर भिक्षा पात्र ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : वे उस पर बोल रहे हैं। आप बैठ जाइये। उस पर चर्चा हो गयी है। जिन्होंने नोटिस दिया था, वे बोल चुके हैं। रघुवंश जी, आप बोलिये। वैसे तो आप इतने जोर से बोलते हैं, लेकिन आज आप धीमे बोल रहे हैं।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : भगवान बुद्ध का मशहूर भिक्षा पात्र अफगानिस्तान के काबुल संग्रहालय में रखा हुआ है। जब भगवान बुद्ध का वैशाली में अंतिममय वास हुआ, उस सभा में भगवान बुद्ध ने अपने महानिर्वाण की घोषणा की कि आज से नौवें दिन हमारा महापरिनिर्वाण होगा। वहां से जब उन्होंने यात्रा शुरू की, तो वैशाली के लोग उनका साथ नहीं छोड़ रहे थे, पीछा कर रहे थे। भगवान बुद्ध उन्हें रुक-रुक कर लौटाने का काम कर रहे थे कि वैशाली के लोग लौट जायें। जब वे नहीं लौटे, तो अंत में केसरिया में जाकर उन्होंने अपना भिक्षा पात्र वैशाली के लोगों को दे दिया। वह भिक्षा पात्र भगवान इन्द्र, यम, कुबेर, और वरूण, इन चार देवताओं ने दिया था। वह सब एक हो गया था। उस मशहूर भिक्षा पात्र की वैशाली में छः सौ वर्षों तक पूजा की गयी। लेकिन प्रथम शताब्दी ने जब कनिष्क ने चढ़ाई की और पाटलीपुत्र वैशाली को जीत लिया, उस समय पाटलीपुत्र से अश्वघोष नाम के महापंडित और वैशाली का भिक्षा पात्र अपने साथ ले गये। उस समय पेशावर पुरुषपुर था, कनिष्क की राजधानी थी। कनिष्क की राजधानी, जो अभी पेशावर है, वहां पर ले गए और वहां से वह भिक्षा-पात्र कंधार में रखा गया था। जब फाह्यान और ह्वेनसांग नामक चीनी यात्रियों ने हिन्दुस्तान की यात्रा की, तो उन्होंने अपनी यात्रा वृतांत में वर्णन किया कि भगवान बुद्ध का भिक्षा-पात्र कंधार में रखा हुआ है। जब उस समय के डॉ. कनिंघम, डायरेक्टर जनरल ऑफ आरकियोलोजिकल ऑफ इंडिया, जो वर्ष 1880 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक हुए, उन्होंने अपने लेख में लिखा है। जब हमने सवाल उठाया, तो विदेश मंत्री श्री एस.एन. कृष्णा ने मुझे लिखित उत्तर दिया है कि उनके एमबैसी से उन्होंने जानकारी हासिल की कि अफगानिस्तान के राष्ट्रपति श्री नज़ीबुल्ला के समय में वह भिक्षा-पात्र कंधार से लाकर काबुल के संग्रहालय में रखा गया है। इसके संबंध में डॉ. कनिंघम और फ्रांस के एक इतिहासकार, पाकिस्तान के पेशावर यूनिवर्सिटी के इतिहास के हेड, जवाहरलाल विश्वविद्यालय की श्रीमती रोमिला थापर, जिनका दुनिया में प्राचीन इतिहास में ख्याति है, दिल्ली यूनिवर्सिटी, पटना यनिवर्सिटी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी आदि के विद्वान इतिहासकारों ने और पुरातत्त्ववेताओं ने यह साबित किया है कि वह वैशाली का भिक्षा-पात्र है। इसलिए वह वैशाली का जो हमारा मशहूर और ऐतिहासिक धरोहर है, मैंने भारत सरकार, आरकियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया तथा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय का ध्यान आकृष्ट किया कि सभी ऐतिहासिक पुरातात्विक सबूत के आधार पर, भगवान बुद्ध का वह महान् भिक्षा-पात्र, जो वैशाली की धरोहर है, उसे वापस लाया जाए। मैं समझता हूं कि इसमें सभी का समर्थन है। उस धरोहर को यहां पर लाकर वैशाली में स्थापित किया जाए। यही हमारी मांग है।

अध्यक्ष महोदया:

श्री पन्ना लाल पुनिया तथा

श्री हर्षवर्धन को माननीय सदस्य डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह द्वारा उठाये गये विषय के साथ संबद्ध किया जाता है।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): मैंने नोटिस दिया है, लेकिन मुझे समय नहीं मिला है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अभी आपको बुलवाएंगे।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : इनको बोलने दीजिए, देश का मामला है।

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए।